

## राष्ट्रीय एकता और हिंदी

एम. ए. पीरान

अध्यक्ष एवं सह-प्राध्यापक, हिंदी विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुरा।

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.18330717>

### ABSTRACT:

यह लेख भारत की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता के भीतर राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने में हिंदी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका का अन्वेषण करता है। यह स्वतंत्रता संग्राम में जन-जागरण के माध्यम के रूप में हिंदी के ऐतिहासिक योगदान और प्रशासन तथा नागरिकों के बीच की दूरी को पाटने के लिए राजभाषा के रूप में इसके विकास का परीक्षण करता है। अध्ययन विभिन्न समुदायों को जोड़ने वाली संपर्क भाषा के रूप में हिंदी के कार्य को उजागर करता है, जो भावनात्मक और सांस्कृतिक एकीकरण को मजबूत करती है। इसके अतिरिक्त, यह आधुनिक डिजिटल युग में हिंदी की प्रासंगिकता पर चर्चा करता है और जोर देता है कि आपसी सम्मान और समन्वय के माध्यम से हिंदी को अपनाता राष्ट्रीय अखंडता के लिए अनिवार्य है।

### KEYWORDS:

राष्ट्रीय एकता, हिंदी भाषा, सांस्कृतिक विविधता, संपर्क भाषा, राष्ट्रीय चेतना.

.....

भारत एक विशाल, प्राचीन तथा सांस्कृतिक रूप से अत्यंत समृद्ध देश है। इसकी पहचान इसकी बहुलता में निहित है। यहाँ अनेक धर्म, जातियाँ, भाषाएँ, बोलियाँ, रीति-रिवाज, परंपराएँ तथा जीवन-पद्धतियाँ सह-अस्तित्व में पाई जाती हैं। इतनी व्यापक विविधताओं के बावजूद भारत एक राष्ट्र के रूप में सदियों से एकजुट रहा है। यह एकता केवल संयोग नहीं है, बल्कि इसके पीछे सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई तत्वों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने और मजबूत करने में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। भारतीय संदर्भ में हिंदी ने इस दिशा में एक सशक्त माध्यम के रूप में कार्य किया है।

राष्ट्रीय एकता का अर्थ केवल भौगोलिक सीमाओं के भीतर रहना नहीं है, बल्कि यह लोगों के बीच भावनात्मक, सांस्कृतिक और वैचारिक सामंजस्य को भी दर्शाती है। जब किसी देश के नागरिक एक-दूसरे को समझ पाते हैं, उनके विचारों और भावनाओं से जुड़ पाते हैं, तभी वास्तविक राष्ट्रीय एकता संभव होती है। भाषा इस आपसी समझ का सबसे प्रभावी साधन है। हिंदी भारत में एक ऐसी भाषा के रूप में विकसित हुई है, जो विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों के बीच संवाद का सेतु बनती है।

भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह किसी समाज की संस्कृति, इतिहास और सामूहिक चेतना की संवाहक होती है। हिंदी ने भारतीय समाज में यही भूमिका निभाई है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय हिंदी ने जन-जागरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। हिंदी के माध्यम से स्वतंत्रता, स्वराज, समानता और राष्ट्रीय एकता के विचार आम जनता तक पहुँचे। इससे देशवासियों में एक साझा राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं के सामने यह चुनौती थी कि प्रशासन के लिए ऐसी भाषा का चयन किया जाए, जो लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप हो और जिसे देश का सामान्य नागरिक समझ सके। इसी उद्देश्य से हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। यह निर्णय किसी अन्य भाषा को कमतर ठहराने के लिए नहीं लिया गया था, बल्कि प्रशासन और जनता के बीच की दूरी को कम करने के लिए था। हिंदी के प्रयोग से शासन अधिक पारदर्शी और जनोन्मुखी बना।

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है और यहाँ प्रत्येक भाषा का अपना ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व है। हिंदी की भूमिका सभी भाषाओं

के साथ समन्वय स्थापित करने की रही है। हिंदी ने संपर्क भाषा के रूप में विभिन्न भाषाई समुदायों को जोड़ने का कार्य किया है। जब लोग हिंदी के माध्यम से एक-दूसरे से संवाद करते हैं, तो आपसी समझ, सहयोग और भाईचारे की भावना विकसित होती है। यही भावना राष्ट्रीय एकता की नींव को मजबूत करती है।

हिंदी साहित्य ने भी राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। हिंदी के कवियों और लेखकों ने सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक एकता और मानवीय मूल्यों को अपने साहित्य में प्रमुखता दी है। साहित्य ने समाज को आत्मचिंतन की दिशा दी और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज़ उठाई। इस प्रकार हिंदी साहित्य राष्ट्रीय चेतना का सशक्त माध्यम बना।

आधुनिक युग में वैश्वीकरण और तकनीकी विकास के कारण विदेशी भाषाओं का प्रभाव बढ़ा है, फिर भी हिंदी की प्रासंगिकता कम नहीं हुई है। शिक्षा, मीडिया, सिनेमा, साहित्य और डिजिटल मंचों पर हिंदी की व्यापक उपस्थिति दिखाई देती है। आज हिंदी केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि विश्व के अनेक देशों में बसे भारतीयों को भी अपनी संस्कृति और पहचान से जोड़े रखती है।

राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि भाषा को विभाजन का कारण न बनने दिया जाए। भाषा के आधार पर उत्पन्न विवाद समाज में तनाव पैदा कर सकते हैं। इसलिए हिंदी को थोपने के बजाय अपनाने की भावना को बढ़ावा देना चाहिए। जब हिंदी को सहयोग, सम्मान और समन्वय की भाषा के रूप में अपनाया जाता है, तभी वह राष्ट्रीय एकता को मजबूत कर सकती है।

आज की युवा पीढ़ी के लिए भी हिंदी का महत्व अत्यंत है। आधुनिक तकनीक और डिजिटल माध्यमों में हिंदी का बढ़ता प्रयोग यह सिद्ध करता है कि यह भाषा समय के साथ स्वयं को ढालने की क्षमता रखती है। हिंदी परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करती है और राष्ट्रीय एकता को निरंतर सुदृढ़ बनाती है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि हिंदी राष्ट्रीय एकता की एक सशक्त आधारशिला है। यह भारत की विविधताओं को एक साझा सूत्र में बाँधने का कार्य करती है। हिंदी केवल संवाद की भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, परंपरा और राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति है। यदि हिंदी को सहयोग, सह-अस्तित्व और सम्मान की भाषा के रूप में

अपनाया जाए, तो भारत की राष्ट्रीय एकता और अखंडता और अधिक मजबूत हो सकती है।

### संदर्भ:

1. People of India Project, Language & Script Volume-9, 1993, New Delhi, India.
2. रामविलास शर्मा – भारत की भाषा समस्या, पृ. 6, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978.
3. केशवचन्द्र माहेश्वरी (संपा.), डॉ. रामविलास शर्मा: भारतीय भाषाएँ और हिंदी, पृ. 156-157.
4. नागरी प्रचारिणी पत्रिका, जनवरी 2009, अंक-1, पृ. 66, वाराणसी.
5. देवेन्द्र नाथ शर्मा – राष्ट्रभाषा हिंदी समस्याएँ एवं समाधान, पृ. 16, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1987.
6. Indian Readership Survey (IRS) 2012 Q1, by Media Research Users Council, Mumbai.

#### **Funding:**

This study was not funded by any grant.

#### **Conflict of interest:**

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

#### **About the License:**

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.